



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 90]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मई 6, 2011/वैशाख 16, 1933

No. 90]

NEW DELHI, FRIDAY, MAY 6, 2011/VAISAKHA 16, 1933

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 मई, 2011

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीविंग मशीन नीडल्स के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जाँच ।

फा. सं. 14/10/2010-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे इसके बाद अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण), नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

जांच शुरुआत

2. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को मै. एल्टेक बेस्सल लिमिटेड, कैलमबक्कम से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें चीन जन.गण. (जिसे इसके बाद संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीविंग मशीन (जिसे इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया है ।

3. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सकारात्मक साक्ष्य के आधार पर संतुष्टि करने के पश्चात् प्राधिकारी ने दिनांक 19 मई, 2010 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित अधिसूचना सं. 14/10/2010-डीजीएडी द्वारा चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीविंग मशीन नीडल्स के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत की थी ।

प्रक्रिया

4. इस जांच के संबंध में नीचे उल्लिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- प्राधिकारी ने ऊपर उल्लिखित नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच की शुरुआत करने से पूर्व याचिकाकर्ता द्वारा सीविंग मशीन नीडल्स के पाटन के संबंध में जांच करने का अनुरोध करने संबंधी आवेदन प्राप्त करने के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों/प्रतिनिधियों को सूचित किया था ;

- ii. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार घरेलू उद्योग को दिनांक 19.05.2010 की जांच शुरुआत अधिसूचना की प्रतियां भेजी थीं और जांच शुरुआत अधिसूचना के 40 दिन के भीतर उनसे अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था ।
- iii. प्राधिकारी ने ऊपर उल्लिखित नियम 6(3) के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रतियां भेजी थीं ।
- iv. नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरु करने के संबंध में भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को सूचित किया गया था और निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह देने का अनुरोध किया गया था । निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की प्रति निर्यातकों के नाम एवं पत्रों सहित उन्हें भी भेजी गई थीं ।
- v. नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देश में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों से संगत सूचना मांगने के लिए प्राधिकारी द्वारा उन्हें प्रश्नावलियां प्रेषित की गई थीं ।

क्र.सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	हेमेन सिटी मेटु नीडलमेकिंग कं. लि.
2	जियांग्सु मेस सीविंग मशीन नीडल्स कं. लि.
3	हेमेन डाली सीविंग मशीन नीडल्स कं. लि.
4	स्वोर्ड मशीन नीडल कं. लि.
5	फ्लाईंग टाइगर नीडल कं. लि.
6	नान फैंग नीडल कं. लि.

- vi. किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने उपरोक्त अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है ।
- vii. नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगवाने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावली प्रेषित की गई थी । तथापि, संबद्ध वस्तु के किसी भी आयातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं भेजा है ।

क्र.सं.	आयातक का नाम
1	मदुरा कोट्स प्रा.लि.

2	अश्विन इंटरकॉन्टिनेंटल
3	ग्रोज बैकर्ट एशिया प्रा.लि.
4	कोहिनूर इम्पेक्स
5	सनी इंटरनेशनल
6	पॉल ब्रोज कंपनी प्रा. लि.
7	स्लीम कार्पोरेशन
8	नीडल इंडट्री (इंडिया) प्रा.लि.

- viii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय रूपांतर को एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण हेतु खुला रखा ।
- ix. वाणिज्यिक अधिसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से अनुरोध किया गया कि वे पिछले तीन वर्षों एवं जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे उपलब्ध कराएं ।
- x. सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत जानकारी पर आधारित भारत में संबद्ध वस्तु की अनुकूल उत्पादन-लागत, और विनिर्माण एवं बिक्री लागत की गणना की गई जिससे यह पता लगाया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम पाटनशोधी शुल्क लगाया जाता है तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त रहेगा ।
- xi. दिनांक 1 जनवरी, 2009 से 31 दिसंबर, 2009 (जांच अवधि) तक की अवधि के लिए जांच की गई थी । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच के लिए अप्रैल, 2006-मार्च, 2007, अप्रैल, 2007-मार्च, 2008, अप्रैल 2008-मार्च, 2009 और जांच अवधि को शामिल किया गया ।
- xii. नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने दिनांक 1 दिसंबर, 2010 को आयोजित एक सार्वजनिक सुनवाई में सभी हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया । आवेदक को छोड़कर किसी भी पक्षकार ने सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत नहीं किए और उनसे मौखिक रूप से प्रस्तुत विचारों को लिखित रूप में दर्ज कराने का अनुरोध किया गया ।
- xiii. हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/निवेदनों में दिए गए तर्कों, जहां भी वे संगत पाए गए हैं, पर विचार किया गया है ।

- xiv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार वर्तमान प्रकटन में ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों की जानकारी में प्राधिकारी द्वारा जिन अनिवार्य तथ्यों पर विचार किया गया है, उन तथ्यों और उनके संबंध में प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणाम में विधिवत विचार किया गया है।
- xv. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अगोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना की जांच, गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संदर्भ में की गई थी। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक हो, गोपनीयता का अधिकार प्रदान किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों पर प्रकट नहीं किया गया है। जिन पक्षकारों ने गोपनीय आधार पर सूचना उपलब्ध कराई है, उन्हें जहां भी आवश्यक हो, गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है।
- xvi. यदि किसी हितबद्ध पक्षकार ने आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है या उचित समय के भीतर उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है तो उस स्थिति में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज किए हैं।
- xvii. इस अधिसूचना में *** ने गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना प्रस्तुत की है और नियम के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा यही माना गया है।

विचाराधीन उत्पाद और घरेलू वस्तु के समान वस्तु

5. विचाराधीन उत्पाद सीविंग मशीन नीडल है। विचाराधीन उत्पाद के दायरे में घरेलू तथा औद्योगिक दोनों प्रयोजनों के लिए उद्दिष्ट सीविंग मशीन नीडल्स शामिल हैं। सीविंग मशीन नीडल्स के दोनों वर्गों में से प्रत्येक के अंतर्गत अनेक आकार और प्वाइंट स्टाइल (सामान्य, बॉल प्वाइंट, लेदर प्वाइंट आदि) आते हैं। नीडल्स के अनेक प्रकार होते हैं जिनका इस्तेमाल वोवन, निट परिधान सिलने, चर्म, कढ़ाई आदि के लिए किया जाता है। विभिन्न नीडल्स को "सिस्टम" के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक सिस्टम में अनेक आकारों की नीडल्स होती हैं। प्रत्येक आकार के लिए विभिन्न प्वाइंट स्टाइल्स हो सकते हैं। सीविंग मशीन नीडल्स सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 84 के तहत उपशीर्ष 8452.30 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। तथापि, यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है। सीविंग मशीन निडिल सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 84 के उपशीर्ष 8452.30 के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, ये वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

6. सीविंग मशीन नीडल्स को सिलाई मशीन में लगाया जाता है और उसका उपयोग विभिन्न उत्पादों को सिलने के लिए किया जाता है। नीडल्स का इस्तेमाल अनेक प्रयोजनों के लिए किया जाता है जिनमें से वोवन परिधानों, निट परिधानों की सिलाई, कढ़ाई और चर्म

परिधानों की सिलाई महत्वपूर्ण हैं । इसके अतिरिक्त फर्निशिंग, डॉल मेकिंग, जिल्दसाजी, व्हेकल सीट कवर आदि जैसे अन्य कार्य भी इसमें शामिल हैं ।

आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

7. किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के संबंध में कोई टिप्पणी अथवा अनुरोध प्रस्तुत नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

8. समान वस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नानुसार प्रावधान किया गया है :-

"समान वस्तु" का अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटन के लिए जांच के अधीन वस्तु के समान हो या प्रत्येक दृष्टि से उसके जैसी हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य ऐसी वस्तु जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो तब भी उसमें जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हो;

9. निर्यातकों द्वारा भारतीय बाजार में बेचे गए उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए उत्पाद के बीच संभव अंतर के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस बात पर कोई मतभेद प्रकट नहीं किया है कि दोनों उत्पादों में कोई अंतर है । रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी का मत है कि संबद्ध देश से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु और आयातित संबद्ध उत्पाद भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्मों, प्रकार्यों और प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण एवं विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के रूप में तुलनीय है । दोनों उत्पाद तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं । उपभोक्ता इन दोनों का अदल-बदलकर इस्तेमाल कर रहे हैं ।

10. अतः प्राधिकारी का मानना है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सिलाई मशीन की सूईयां पाटनरोधी नियमों के अनुसार संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुओं के समान उत्पाद है ।

घरेलू उद्योग का कार्य क्षेत्र एवं स्थिति

11. यह आवेदन मै. एल्टेक बेसल लि., केलाम्बक्कम द्वारा दायर किया गया है ।

घरेलू उद्योग के विचार

12. घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नानुसार निवेदन किया गया है :

- i. याचिकाकर्ता, मै. एल्टेक बेसल लि. केलाम्बक्कम के अलावा भारत में विचाराधीन उत्पाद के तीन अन्य उत्पादक हैं । मै. टी वी एस सीविंग नीडल्स लि. ने कथित रूप से निरंतर घाटन के परिणामस्वरूप प्रचालन बंद कर दिया है । अन्य दो उत्पादक मै. श्मेत्ज इंडिया प्रा.लि. तथा मै. ग्रॉज बेकर्ट एशिया प्रा.लि. :-
 - (क) जर्मनी में उनकी मूल कंपनी की 100% सहायक कंपनियां हैं,
 - (ख) अपने संपूर्ण उत्पादन का निर्यात अपनी मूल कंपनी को करती हैं; तथा
 - (ग) जर्मनी की अपनी-अपनी मूल कंपनियों से सभी नीडल्स का आयात, भारत में पुनः बिक्री के लिए करती हैं ।
- ii. अतः मै. एल्टेक बेसल लि. ही भारत में संबद्ध वस्तुओं का एकमात्र पात्र घरेलू उत्पादक है और नियम, 1995 के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उत्पादक बनता है ।
- iii. याचिकाकर्ता के उत्पादन का हिस्सा भारतीय उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा बनता है अतः नियम के अर्थों के भीतर याचिकाकर्ता को "घरेलू उद्योग " माना जाना चाहिए ।

आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

13. किसी भी आयातक, उपभोक्ताओं, निर्यातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकार, ने घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में कोई टिप्पणी अथवा विचार प्रस्तुत नहीं किए हैं ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

14. घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में, नियम 2(ख) में निम्नानुसार उल्लिखित है :

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में

“घरेलू उद्योग शब्द का तात्पर्य केवल शेष उत्पादकों से होगा । ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा” ।

15. यह आवेदन मै. एल्टेक बेसल लि. केलाम्बक्कम द्वारा दायर किया गया है । एक अन्य ज्ञात उत्पादक मै. टी वी एस सीविंग नीडल्स लि. ने प्रचालन बंद कर दिया है । मै. श्मेल्ज इंडिया प्रा.लि. तथा मै. ग्रॉज बेकर्ट एशिया प्रा. लि., जर्मनी में स्थित अपनी मूल कंपनी की 100% सहायक कंपनियां हैं, वे अपने संपूर्ण उत्पादन का निर्यात अपनी मूल कंपनी को करती हैं तथा भारत में पुनः बिक्री हेतु जर्मनी स्थित अपनी-अपनी मूल कंपनियों से सभी सिलाई मशीन की सूइयों का आयात करती हैं । अतः घरेलू बाजार में उनके प्रचालन मुख्य रूप से आयात आधारित हैं न कि घरेलू उत्पादन आधारित । प्राधिकारी ने जांच से संबंधित सूचना उपलब्ध कराने के लिए इन विनिर्माताओं को भी लिखा है । प्राधिकारी ने इनके संबंध में अथवा विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण कर रहे अन्य विनिर्माताओं के बारे में सूचना उपलब्ध कराने के लिए प्रशासनिक मंत्रालय अर्थात् डी आई पी पी को भी लिखा है । तथापि, इन विनिर्माताओं अथवा प्रशासनिक मंत्रालय से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है । अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आवेदक, वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ “घरेलू उद्योग” हैं । इसके अलावा, आवेदक पाटनरोधी नियम के नियम 2(ख) और नियम 5(3) (क) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से पाटनरोधी जांच हेतु मामला दायर करने की अर्हता रखते हैं ।

सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

चीन जन.गण. हेतु सामान्य मूल्य

घरेलू उद्योग के विचार

16. आवेदक ने दावा किया है कि चीन जन.गण. एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था है । विस्तृत मूल्यांकन प्रक्रिया, जांच तथा मूल्य-निर्धारण के पश्चात् किसी भी देश ने चीन जन.गण. को बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का दर्जा प्रदान नहीं किया है । आगे इन्होंने दावा किया है कि चीन जन.गण. ने भी अभिगमन संधि में इस बात पर सहमति व्यक्त की थी की डब्ल्यू टी ओ सदस्य 11 दिसंबर, 2016 तक गैर- बाजार अर्थव्यवस्था (एन एम ई) पाटनरोधी पद्धति का उपयोग कर सकेंगे । पिछले तीन वर्षों में यूरोपीय आयोग तथा संयुक्त राज्य अमरीका ने चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है । यूरोपीय संघ तथा अमरीका, विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं । भारत में भी, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 31 मई, 2002 के संशोधन के पश्चात् चीन जन.गण. के विरुद्ध शुरू की गई प्रायः सभी जांचों में चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है । दिनांक 4 जनवरी, 2003 के संशोधन के पश्चात् भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है ।

चीन के उत्पादकों/निर्यातकों के विचार

17. चीन के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने जांच के संबंध में कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि गत तीन वर्षों के दौरान चीन जन.गण. को पाटनरोधी जांचों में अन्य डब्ल्यू टी ओ सदस्यों द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना गया है । अतः पाटनरोधी नियमों के अनुबंध के पैरा 8(2) के अनुसार चीन जन.गण. को उपर्युक्त नियमों के संदर्भ में निर्यातक देश अथवा अलग-अलग निर्यातकों द्वारा उपर्युक्त पूर्वधारणा के खंडन के अध्वधीन गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है ।

19. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक (निर्यातकों) द्वारा पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं । चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- (क) कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;
- (ख) इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बड़े खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्वधीन हैं;
- (ग) इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्वधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- (घ) विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है ।

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. के किसी भी निर्यातक ने कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है । चूंकि चीन जन.गण. के किसी उत्पादक/निर्यातक द्वारा घरेलू बिक्री कीमत,

तीसरे देश को निर्यात, चीन जन.गण. में उत्पादन की लागत तथा प्रस्तावली में उल्लिखित अन्य सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है। अतः प्राधिकारी वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानते हैं।

सामान्य मूल्य

21. प्राधिकारी ने प्रारंभिक अधिसूचना में यह उल्लेख किया था कि आवेदक ने यह दावा किया है कि चीन जन.गण. गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियम के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियां आमंत्रित कीं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है। अतः चीन के किसी भी उत्पादक ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा नहीं किया है। इसके अलावा, किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उचित तीसरे देश के विकल्प पर कोई टिप्पणी प्रस्तुत नहीं की है।

उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के मामले में पाटनरोधी नियम के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

इस प्रकार परिकलित सामान्य मूल्य 162586 रूपए (3325 अम.डॉ. के समतुल्य) प्रति लाख नग नीडल्स (भारतीय रूपए की परिवर्तन दर 48.9 रूपए = 1 अम.डॉ. के आधार पर) बनता है। वर्तमान मामले में इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य का उल्लेख भी पाटन मार्जिन की तालिका में किया गया है।

चीन से निर्यात कीमत

22. चीन जन.गण. से आयातों के संबंध में, उत्पादकों/निर्यातकों के असहयोग के कारण प्राधिकारी ने इन्फोइंडाइव तथा याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत चीन के सीमाशुल्क कार्यालय तथा प्राधिकारी द्वारा डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों के अनुसार सौदेवार आंकड़ों की जांच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. द्वारा किए गए निर्यात के विषय में इन्फो इंडाइव द्वारा सूचित आंकड़े 5,377 लाख नग हैं जबकि चीन के सीमाशुल्क कार्यालय द्वारा सूचित आंकड़े 5,510 लाख नग हैं। इसके अलावा, डी जी सी आई एस रिपोर्ट में जांच अवधि में विचाराधीन उत्पाद के आयातों की सूचित मात्रा 3920 लाख नग थी। समुद्री भाड़ा तथा विदेशी बीमा हेतु समायोजन करने के पश्चात कारखाना द्वार निर्यात कीमत 148 अम.डॉ. प्रति लाख नग बनती है।

पाटन मार्जिन

23. ऊपर निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के आधार पर संबद्ध देश से निर्यातकों के पाटन मार्जिन का निर्धारण नीचे दी गई तालिका के अनुसार किया गया है :

पाटन मार्जिन गणना (प्रति लाख नग):

आंकड़ों का स्रोत	डी जी सी आई एंड एस
सामान्य मूल्य (अम.डॉ.)	3325
निर्यात कीमत (अम.डॉ.)	148
पाटन मार्जिन (अम.डॉ.)	3177
पाटन मार्जिन %	2151
आयात मात्रा (लाख नग)	3920

24. इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन उल्लेखनीय तथा न्यूनतम स्तर से अधिक होते हैं ।

क्षति निर्धारण तथा कारणात्मक संबंध की जांच

घरेलू उद्योग के विचार

25. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं :-

- क. विचाराधीन उत्पाद के पाटन का एक लंबा इतिहास रहा है । पूर्व में भी इसकी जांच की गई थी तथापि कोई निश्चयात्मक शुल्क नहीं लगाया गया था ।
- ख. चीन से सिलाई मशीन की सूइयों के आयात में उत्तरोत्तर अत्यधिक वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप अब चीन से होने वाले आयात की अधिकांश मात्रा भारत को आयात की जाती है ।
- ग. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से निर्यात मात्रा पाटित स्तर पर रही है ।
- घ. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में गिरावट आई है जबकि वर्ष 2007-08 तथा 2008-09 में गिरावट के पश्चात जांच अवधि में बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है ।
- ङ. घरेलू उद्योग के सभी प्रकार के लाभ/घाटे (पी बी टी, पी बी आई टी तथा पी बी डी आइ टी) में अत्यधिक गिरावट आई और वर्ष 2008-09 और जांच अवधि के दौरान यह नकारात्मक हो गया था ।
- च. क्षति की समस्त अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा उल्लेखनीय बना रहा । यह इस तथ्य के कारण हुआ कि पाटित आयातों का वर्चस्व बना रहा था ।
- छ. संबद्ध देशों के आयातों ने घरेलू उद्योग की कीमतों में उल्लेखनीय सीमा तक कटौती की है ।
- ज. संबद्ध देश के आयातों ने घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान अपनी कीमतों में भारी करने करने के लिए विवश कर दिया था । इस प्रकार आयातों के कारण इस अवधि के दौरान कीमतों पर दबाव बना रहा ।
- झ. घरेलू उद्योग के रोजगार स्तरों में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है ।
- ञ. वेतन एवं मजदूरी :- घरेलू उद्योग के वेतन एवं मजदूरी के स्तरों में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है ।

- ट. मांग एवं बाजार हिस्सा : चीन से किए गए आयातों ने जहां मांग में उल्लेखनीय बाजार हिस्सा बनाए रखा है वहीं क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा नगण्य बना रहा ।
- ठ. वृद्धि : अनेक मानदंडों के संदर्भ में घरेलू उद्योग की वृद्धि में नकारात्मक प्रवृत्ति देखी गई ।
- ड. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और यह मात्रात्मक प्रभाव और कीमत प्रभाव के उपचक्र में फंस गया है । विदेशी उत्पादकों की बेशी क्षमता के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग को बिक्री में घाटे और बाजार हिस्से में घाटे का सामना करना पड़ा है । इसकी परिणति प्रतिकूल कीमत प्रभाव में हुई । बिक्री में घाटे के कारण घरेलू उद्योग को घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री हेतु अपनी घरेलू बिक्री कीमत घटाने पर विवश होना पड़ा, जिसकी परिणति प्रतिकूल कीमत प्रभाव में हुई । इसके परिणामस्वरूप निर्यात देशों को अनुचित व्यापार पद्धति के कारण घरेलू उद्योग को प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव और प्रतिकूल कीमत प्रभाव का सामना करना पड़ा ।
- द. आयातों की मात्रा में निरपेक्ष रूप से अत्यधिक वृद्धि हुई है । निर्यातों में यह वृद्धि अपनी सामग्री अनुकूलतम से कम कीमत पर बेचने के घरेलू उद्योग के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद हुई है । शामिल उत्पाद के स्वरूप को देखते हुए घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद की कीमत में कोई भी अंतर उपभोक्ताओं को स्वीकार्य नहीं है और घरेलू उद्योग कीमत कम करने के लिए निरंतर दबाव में है । इसके परिणामस्वरूप भारतीय उत्पादकों में से एक उत्पादक ने लगभग तीन दशकों के प्रचालन के बाद उत्पादन स्थगित कर दिया है ।
- ण. यदि वर्तमान पाटन जारी रहता है तो याचिकाकर्ता को भी उत्पादन स्थगित करने पर विवश होना पड़ेगा ।

प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों के विचार

26. किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में कोई मुद्दा नहीं उठाया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

27. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति से संबंधित निवेदनों को नोट किया है और सत्यापित आंकड़ों, रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों तथा लागू कानून पर विचार करते हुए

क्षति का विश्लेषण किया है । क्षति विश्लेषण प्रचलित पद्धति के अनुसार तथा नियमावली के अधिदेशानुसार क्षति अवधि के संदर्भ में किया गया है ।

28. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में निम्नलिखित की वस्तुनिष्ठ जांच करने का प्रावधान है :-

क. घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा और पाटित आयातों का प्रभाव; और

ख. ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव ।

29. जहां तक पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के सापेक्ष पाटित आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है । जहां तक पाटित आयातों के कीमत प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का उद्देश्य कीमतों में अत्यधिक सीमा तक कमी करना अथवा कीमत वृद्धि को रोकना था, जो अन्यथा अत्यधिक सीमा तक हुई होती ।

30. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार उल्लेख किया गया है :-

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा ।"

पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

31. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के आयात का सौदेवार ब्यौरा डी जी सी आई एंड एस तथा वर्ल्ड ट्रेड एटलस से संकलित किया था । प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए इन्फो ड्राइव डाटा सोर्स से प्राप्त आंकड़ों की भी जांच की थी । यह नोट किया जाता है कि इन्फो ड्राइव तथा डब्ल्यूटी ओ में सूचित आयात डी जी सी आई एंड एस

आंकड़ा स्रोत में सूचित आयातों से अधिक हैं। तथापि वर्तमान जांच में पाटन के मात्रात्मक विश्लेषण एवं कीमत प्रभाव के प्रयोजनार्थ विश्लेषण डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों के आधार पर किया गया है जो निम्नानुसार है :-

आयात की मात्रा तथा संबद्ध देश का हिस्सा

आयात की मात्रा तथा संबद्ध देश का हिस्सा	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09-दिस. 09
चीन (संबद्ध देश)	लाख रुपए में	2,942	2,935	2,655	3,920
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	90	133
अन्य	लाख रुपए में	1,126	950	924	913
कुल आयात	लाख रुपए में	4,068	3,885	3,571	4,833
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95	88	119
आयातों में बाजार हिस्सा					
चीन (संबद्ध देश)	%	72.30	75.55	74.18	81.11
अन्य	%	27.68	24.45	25.82	18.29
घरेलू उद्योग का उत्पादन	लाख रुपए में	347	307	226	158
संबद्ध देशों से आयात	लाख रुपए में	2,942	2,935	2,655	3,920
उत्पादन के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयात	%	847.83	956.02	1174.78	2481.01

आयातों में बाजार हिस्सा

32. उपर्युक्त तालिका में दर्शाए गए आंकड़ों के अनुसार :-

क. पूर्ववर्ती वर्ष अर्थात् 2008-09 में हुए आयातों से तुलना करने पर संबद्ध देशों से किए गए आयातों में निरपेक्ष रूप से तथा भारत में आयातों की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। तथापि मूल क्षति अवधि की तुलना में आयातों की मात्रा में लगभग 33% की वृद्धि प्रदर्शित होती है।

ख. क्षति की समस्त अवधि के दौरान भारत में उत्पादन और खपत के संदर्भ में संबद्ध देशों से हुए आयात अत्यधिक हैं।

मांग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा

मांग, उत्पादन और बाजार हिस्सा	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09-दिस. 09
घरेलू उद्योग की बिक्री	लाख रुपए में	90	61	49	70
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	67	55	77
अन्य भारतीय उत्पादकों की	लाख रुपए में	249	255	253	-

बिक्री					
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	102	-
आयात- संबद्ध देश	लाख रूपए में	2,942	2,935	2,655	3,920
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	90	133
आयात- अन्य देश	लाख रूपए में	1,126	950	924	913
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95	88	118
कुल मांग	लाख रूपए में	4,407	4,201	3,881	4,903
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95.32	88.06	111
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	2.05	1.45	1.27	1.42
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	70	62	69
अन्य भारतीय उत्पादक	%	5.64	6.07	6.52	-
संबद्ध देश	%	66.76	69.87	68.40	79.96
अन्य देश	%	25.55	22.61	23.81	18.62

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बिक्री और सभी देशों के सभी आयातों को जोड़कर संबद्ध वस्तुओं की मांग के निर्धारण के बाद संबद्ध वस्तुओं की मांग में आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2007-08 और 2008-09 में गिरावट आई थी। तथापि, जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई थी। जांच अवधि के दौरान मांग में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 11.25% की वृद्धि हुई। इसके अलावा संबद्ध देशों से आयातों के बाजार हिस्से में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दूसरी ओर कुल मांग में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई। घरेलू उद्योग का हिस्सा जो वर्ष 2006-07 में 100 पर सूचीबद्ध था, जांच अवधि के दौरान घटकर 69 रह गया जो 31% की गिरावट दर्शाता है। तो दूसरी ओर इसी अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा 66.76% से बढ़कर 79.96% हो गया। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से हुए आयातों ने भारतीय मांग के उल्लेखनीय हिस्से को कब्जे में ले लिया है जिसके कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को क्षति हुई थी।

घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09-दिसं.09
संस्थापित क्षमता	लाख में	900	900	900	900
उत्पादन	लाख में	347	307	226	158
क्षमता उपयोग	%	38.53	34.15	25.13	17.60

34. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग संबंधी आंकड़ों से ज्ञात होता है कि घरेलू उद्योग की क्षमता क्षति अवधि के दौरान 900 लाख नगों पर अपवर्तित रही थी। क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में लगातार गिरावट देखी गई। घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग क्षमता से कम रहा। वर्ष 2006-07 के दौरान क्षमता उपयोग 38.53%

था, जिसमें अत्यधिक गिरावट आई और जांच अवधि के दौरान यह घटकर 17.60% रह गया था ।

घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09- दिसं.09
बिक्री की मात्रा	लाख में	90.39	60.99	49.41	69.53
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	67	55	77

35. घरेलू उद्योग की बिक्री से संबंधित उपर्युक्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि वर्ष 2008-09 तक बिक्री में गिरावट आई और जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई थी । तथापि, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री का स्तर कम है ।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

36. नियम 18 के उप नियम (2) में यथाउल्लिखित कीमतों पर पटित आयातों के प्रभाव के संदर्भ में निर्दिष्ट प्राधिकारी विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे उत्पादों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में भारी मात्रा में कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा महत्वपूर्ण रूप में बढ़ गई होगी ।

37. संबद्ध देश से पाटित आयातों के संबंध में घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत वृद्धि एवं कीमत में कमी, यदि कोई है, के संदर्भ में जांच की गई । इस प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री वसूली (एनएसआर), क्षति रहित कीमत (एनआईपी) तथा संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत की जांच की गई है ।

पाटित आयातों का कीमत वृद्धि और कीमत गिरावट प्रभाव

38. घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और निवल बिक्री वसूली के संदर्भ में पाटित आयातों के कीमत वृद्धि एवं गिरावट की भी जांच की गई ।

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09- दिसं.09
बिक्री की लागत	रू./लाख इकाई	*	*	*	*

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	161	157
बिक्री कीमत (एनएसआर)	रु./लाख इकाई	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	107	113

39. उपर्युक्त तालिका से यह प्रदर्शित होता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री की लागत से बिक्री कीमत में अधिक वृद्धि हुई है। प्रवृत्ति से प्रदर्शित होता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री की लागत में महत्वपूर्ण रूप से 57% की वृद्धि हुई है जबकि बिक्री कीमत में जांच अवधि के दौरान 13% की वृद्धि हुई है जिससे यह इंगित होता है कि घरेलू उद्योग बिक्रियों की लागत के अनुपात में बिक्री की वसूली नहीं कर सका जिसके कारण कीमतों में महत्वपूर्ण रूप से गिरावट आई। यह स्थिति वर्ष 2008-09 में भी समान रही।

कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री प्रभाव

कीमत कटौती

आंकड़ों का स्रोत		डी जी सी आई एंड एस
घरेलू उद्योग का एन एस आर	रु./लाख इकाई	*
पहुंच मूल्य	रु./लाख इकाई	7993
कीमत कटौती	रु./लाख इकाई	*
कीमत कटौती	बारंबारता	38

40. घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री वसूली निकालते समय घरेलू उद्योग द्वारा दी गई छूट, छूट और कमीशन तथा भुगतान की गई केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को काट दिया गया है। आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य की गणना मूल सीमाशुल्क के निर्धारण के लिए 1% पहुंच प्रभार को जोड़ा गया है और उसके बाद डी जी सी आई एंड एस आंकड़ा स्रोत द्वारा यथा सूचित संबद्ध देश से औसत निर्यात/सी आई एफ कीमत की मूल सीमाशुल्क में जोड़ी गई है।

41. यह देखा गया है कि संबद्ध वस्तुओं के आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से महत्वपूर्ण रूप से कम है जिसके कारण महत्वपूर्ण रूप से कीमतों में भारी कमी आई।

क्षति मार्जिन

आंकड़ों का स्रोत		डी जी सी आई एंड एस
घरेलू उद्योग का एन आई पी	रु./लाख इकाई	*
पहुंच मूल्य	रु./लाख इकाई	7,913
क्षति मार्जिन	रु./लाख इकाई	*
क्षति मार्जिन	%	2,000- 2,500

42. क्षतिमार्जिन की गणना करने के प्रयोजनार्थ यथाउपरोक्त डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों में यथासूचित संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत की एन आई पी के साथ तुलना की गई है।

घरेलू उद्योग के अन्य आर्थिक मापदंडों की जांच

43. घरेलू उद्योग की मात्रा एवं कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के बाद और पिछले खंड में विभिन्न मांगों के बाजार हिस्से के साथ मांग पद्धति के साथ-साथ घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग एवं बिक्री का उत्पादन, क्षमता, आयातों की मात्रा एवं मूल्य जैसे प्रमुख क्षति संबंधी संकेतकों के साथ अन्य आर्थिक मापदंडों जो घरेलू उद्योग की मौजूदा क्षति को इंगित कर सके, का भी निम्नानुसार विश्लेषण किया गया:

नकदी प्रवाह पर लाभ और वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09- दिसं.09.
बिक्री की लागत	रु./लाख इकाई	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	161	157
बिक्री कीमत (एनएसआर)	रु./लाख इकाई	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	107	113
लाभ/हानि	रु./लाख इकाई	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	(181)	(125)
कर पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	*	*		*

	में			*	
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	74	(99)	(96)
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	लाख रुपए में	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	76	(99)	(96)
नकद लाभ	लाख रुपए में	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	75	(32)	(10)

44. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में व्यापक विकृति आई है। यह पता चलता है कि देश में उत्पाद के पाटन के लंबे इतिहास को देखते हुए घरेलू उद्योग की लाभप्रदता स्थिति काफी प्रतिकूल बनी रही। इसके बावजूद घरेलू उद्योग वर्ष 2008-09 और जांच अवधि में वित्तीय घाटे का सामना कर रहा है। वित्तीय घाटे के कारण इस अवधि में नकद घाटा उठाना पड़ा है।

निवेश पर आय और पूंजी नियोजन की क्षमता

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09- दिसं.09
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	लाख रुपए	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	76	(99)	(96)
निवल अचल संपत्ति	लाख रुपए	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	67	63	107
कार्यशील पूंजी	लाख रुपए	-	-	-	-
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-	-	-	-
नियोजित पूंजी	लाख रुपए	*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	67	63	107
नियोजित पूंजी पर आय (एनएफए आधार पर)		*	*	*	*
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	114	(158)	(90)

45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा स्थापित पूंजी पर प्राप्त आय वर्ष 2008-09 और जांच अवधि में हुई लाभप्रदता और नकारात्मक के प्रवृत्ति के समान रही है।

उत्पादकता

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09- दिसं.09
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	लाख इकाई	2.19	2.21	1.80	1.20

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	82	55
प्रति दिवस उत्पादकता	लाख इकाई	0.95	0.84	0.62	0.43
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	65	46

46. प्रति कर्मचारी आंकड़े प्रदर्शित करते हैं कि आधार वर्ष से जांच अवधि में लगभग 50% की गिरावट आई है ।

रोजगार एवं मजदूरी

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09-दिसं.09
रोजगार (मानव शक्ति बल)	संख्या	158	139	126	132
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	80	84
मजदूरी	लाख रुपए	129.62	142.75	131.08	155.63
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	101	120

47. चूंकि याचिकाकर्ता को उत्पाद की लगातार प्रतिकूल निष्पादन को देखते हुए कामगारों को मजदूरी भुगतान करने और रोजगार जारी रखने में मुश्किल हो रही थी इसलिए रोजगार के स्तर में गिरावट आई है । अनुसूचित रूप में आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान 16% की रोजगार गिरावट आई है ।

मालसूची

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जन. 09-दिसं.09
अथ स्टॉक	लाख इकाई	179.66	153.93	153.60	215.54
इति स्टॉक	लाख इकाई	153.93	153.68	230.49	209.02
औसत स्टॉक	लाख इकाई	166.80	153.81	192.05	212.28
बिक्री के दिनों की संख्या के अनुसार औसत स्टॉक	दिवस	175.55	182.65	309.90	489.10
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	177	279

48. संबद्ध वस्तुओं के मालसूची स्तर के बारे में सूचना उपर्युक्त तालिका में निहित है । यह देखा गया है कि संबद्ध वस्तुओं के लिए मालसूची स्तरों में आधार वर्ष एवं पूर्व वर्ष 2008-09 की तुलना में वृद्धि हुई है । यह नोट किया गया है कि याचिकाकर्ता जांच अवधि में लगभग 500 दिनों का भंडार रखे हुए था । यह इस तथ्य के बावजूद है जबकि याचिकाकर्ता स्थापित क्षमताओं से काफी कम स्तर पर उत्पादन कर रहा था ।

वृद्धि

49. उत्पादन एवं क्षमता उपयोग की वृद्धि में सतत रूप से गिरावट प्रदर्शित हुई है। इस प्रकार घरेलू उद्योग ने पिछले वर्ष 2008-09 की तुलना में जांच अवधि में बिक्रियों में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है। क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं हुआ है। घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में जांच अवधि के दौरान महत्वपूर्ण रूप से गिरावट आई है। घरेलू उद्योग का निष्पादन निवेश एवं नकद प्रवाह के रूप में भी जांच अवधि के दौरान विकृति आई है। यह भी देखा गया है कि जांच अवधि के दौरान बिक्री कीमत बिक्री लागत की तुलना में काफी कम थी जिसके कारण महत्वपूर्ण कीमत ह्रास हुआ। इसके अलावा, संबद्ध वस्तु के आयात से घरेलू उद्योग की कीमतों में महत्वपूर्ण रूप से कमी आई है। कीमत कटौती भी व्यापक रूप से हुई है।

निवेश करने की क्षमता

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष से जांच अवधि में संबद्ध वस्तुओं की क्षमता में परिवर्तन नहीं किया है। आगे निवेश के लिए किसी योजना का कोई साक्ष्य प्राधिकारी के देखने में नहीं आया है।

पाटन की मात्रा

51. जिस सीमा तक आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है, उसके संकेतक के रूप में पाटन की मात्रा से यह प्रदर्शित होता है कि जांच अवधि के लिए संबद्ध देश के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक एवं पर्याप्त हैं।

कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

52. जैसा कि पूर्ववर्ती पैराग्राफों में पहले से ही देखा जा चुका है, संबद्ध देश से आयातों से घरेलू कीमतों में कटौती हो रही है। घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और बिक्री कीमत की तुलना यह दर्शाती है कि आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों का अवमूल्यन भी हो रहा है। यह पाया गया था कि जांच अवधि में प्रति लाख नग पहुंच मूल्य विचाराधीन उत्पाद के निवल बिक्री कीमत और क्षति रहित कीमत, दोनों से कम था जिससे भारतीय बाजार में कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हो रही थी। आयातित उत्पाद की कीमत और घरेलू उद्योग की कीमत में अंतर के परिणामस्वरूप संबद्ध वस्तु के लिए बढ़ती हुई भारतीय मांग में आयातों का बड़ा हिस्सा हो गया है।

क्षति का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

53. क्षति संबंधी उपर्युक्त मापदंडों की जांच से संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग का वित्तीय निष्पादन जो आधार वर्ष में भी पहले ही प्रतिकूल था, उसमें जांच अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आई है।

54. उत्पाद के आयात तथा घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच से यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात में सापेक्ष रूप से और भारत में उत्पाद एवं खपत की तुलना में वृद्धि हुई है। आयात से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कटौती हो रही है और पाटित आयातों के प्रभाव के परिणामस्वरूप बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अवमूल्यन हुआ है। यद्यपि, बिक्री लागत में गिरावट आई है घरेलू बिक्री कीमतों में बिक्री लागत से अधिक गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से अत्यधिक कीमत कटौती हुई है और ऐसे आयातों के प्रभावस्वरूप कीमतों में वृद्धि में रुकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी वृद्धि हुई होती। जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के अनुवर्ती प्रभाव का संबंध है, बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से, लाभ, नकद लाभ एवं निवेश पर आय के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति दर्शाते हुए आयातों से घरेलू कीमतें प्रभावित हो रही हैं जो कि आधार वर्ष से प्रवृत्ति के विश्लेषण से स्पष्ट है। उपर्युक्त के आधार पर निष्कर्ष यह है कि पाटनरोधी नियमों के दायरे के भीतर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

कारणात्मक संबंध एवं अन्य कारक

55. वास्तविक क्षति की उपस्थिति तथा घरेलू उद्योग की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री एवं कीमत ह्रासकारी तथा अवमूल्यनकारी प्रभावों, भारतीय नियमों एवं पाटनरोधी करार के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य सांकेतिक मापदंडों के रूप में घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के मात्रात्मक तथा कीमत संबंधी प्रभाव की जांच करने के बाद प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों से इतर किसी अन्य कारक का घरेलू उद्योग को हुई क्षति में योगदान हो सकता है। इस संबंध में संगत कारकों में अन्य के साथ-साथ पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमत, मांग में संकुचन या खपत के पैटर्न में परिवर्तन, विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों की व्यापार बाधाकारी प्रथाएं तथा उनके बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी विकास एवं निर्यात निष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल है। यह जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत सूचीबद्ध इन अन्य मापदंडों का घरेलू उद्योग को हुई क्षति में योगदान था। यह नोट किया गया था कि :-

पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमत

56. आयात आंकड़ों से यह नोट किया गया है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू मांग के प्रतिशत के रूप में 79.96% आयात संबद्ध देशों से किए गए थे और 18.62% आयात अन्य

देशों से थे । इसके अतिरिक्त, अन्य देशों से आयात अत्यधिक उच्च कीमतों पर किए गए थे । इसलिए अन्य देशों से आयातों से घरेलू बाजार में कीमतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है ।

मांग में संकुचन और/या खपत के पैटर्न में परिवर्तन

57. संबद्ध देशों सहित सभी स्रोतों से आयातों की मात्रा के आधार पर तथा घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन एवं अन्य भारतीय उत्पादकों के उत्पादन पर विचार करने के बाद प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि, वर्ष 2007-08 और 2008-09 के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में मामूली गिरावट आई थी, तथापि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए कुल मांग में पर्याप्त वृद्धि प्रदर्शित हुई है । जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष की तुलना में 11.25% तक की वृद्धि हुई है । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि की दृष्टि से प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की खपत एवं मांग में परिवर्तन घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला कारक नहीं है ।

व्यापार बाधाकारी प्रथाएं और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

58. वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है । प्रतिस्पर्धा की स्थिति या व्यापार बाधाकारी प्रथाओं का कोई साक्ष्य प्राधिकारी की जानकारी में नहीं आया है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान वस्तुएं हैं तथा आयातित उत्पाद की बिक्री घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु की ही तरह समान अनुप्रयोजनों/अंतिम उपयोगों के लिए की जाती है ।

प्रौद्योगिकी विकास

59. याचिकाकर्ता के रिकॉर्डों की जांच के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति के लिए प्रौद्योगिकी विकास संगत कारक नहीं है ।

निर्यात निष्पादन

60. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने घरेलू प्रचालनों के संबंध में अलग से सूचना प्रदान की है । घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति घरेलू प्रचालनों के कारण है । अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति उसके निर्यात निष्पादन के कारण नहीं है ।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

61. प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2007-08 एवं जांच अवधि के दौरान गिरावट प्रदर्शित हुई है जो उसी अवधि के दौरान समग्र उत्पादन में गिरावट के कारण है ।

62. ऐसा कोई अन्य कारक जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो सकती है, प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है ।

कारणात्मकता के संबंध में निष्कर्ष

63. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति प्रदर्शित नहीं होती है, तथापि निम्नलिखित मापदंड यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति पाटित आयातों के कारण है :-

- क. आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम था । कीमत कटौती के कारण उपभोक्ताओं ने अधिक मात्रा में आयात किए जिससे घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई ।
- ख. बाजार हिस्से में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग अपने उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि नहीं कर पाया ।
- ग. आयातों के पहुंच मूल्य से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही थी । संबद्ध देशों से आयातों से भारतीय बाजार में कम कीमत पर बिक्री हुई है । परिणामस्वरूप यह प्रतीत होता है कि कम आयात कीमतों के कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतें नहीं बढ़ा पाया ।
- घ. आयातों की कीमत अवमूल्यनकारी प्रभाव का सीधा परिणाम घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और अनुवर्ती रूप से निवेश पर आय एवं नकद लाभ में कमी के रूप में हुआ है । अतः लाभ, निवेश पर आय तथा नकद लाभ में गिरावट वस्तुतः बाजार में पाटित आयातों की उपस्थिति के कारण है ।
- ङ. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में अत्यधिक गिरावट वस्तुतः बाजार में पाटित आयातों की उपस्थिति के कारण है ।

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

64. घरेलू उद्योग ने सुनवाई के पश्चात निम्नलिखित निवेदन किए हैं :-

- क. घरेलू उद्योग एवं विदेशी उत्पादकों द्वारा पेशकश की जा रही कीमतों में अत्यधिक अंतर है । घरेलू उद्योग द्वारा इष्टतम से कम कीमतों की पेशकश किए जाने पर भी वे बिक्री की मात्रा में मांग की सीमा तक वृद्धि नहीं कर पाए हैं । अतः बिक्री की कम मात्रा चीन से पाटित आयातों के परिणामस्वरूप है;

- ख. बिक्री मात्रा में वृद्धि करने के प्रयासों का परिणाम बिक्री कीमतों में कमी के रूप में हुआ है । प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ में इतनी तेजी से गिरावट आई है कि वह लाभ की स्थिति से निकलकर वित्तीय घाटे की स्थिति में पहुंच गया है;
- ग. लाभ में कमी का सीधा परिणाम लगाई गई पूंजी पर आय तथा नकद प्रवाह में गिरावट के रूप में हुआ है । अतः लाभ, लगाई गई पूंजी पर आय एवं नकद प्रवाह में गिरावट प्रत्यक्ष रूप से पाटित आयातों के कारण है;
- घ. लगातार बिक्री की कम मात्रा से उत्पादन और क्षमता उपयोग प्रभावित हुए हैं । अतः उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में गिरावट पाटित आयातों के कारण है ।
- ङ. उत्पाद के लगातार पाटन और उत्पादन में गिरावट से रोजगार एवं वेतन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।
- च. लगातार पाटन का परिणाम मै. टी वी एस नीडल्स का संयंत्र बंद होने के रूप में हुआ है । यदि यही स्थिति बनी रहती है तो घरेलू उद्योग समाप्त हो जाएगा ।
- छ. घरेलू उद्योग की स्थिति इतनी खराब है कि यदि पाटनरोधी उपाय के रूप में तत्काल राहत की घोषणा नहीं की गई तो घरेलू उद्योग के लिए बने रहना कठिन होगा ।
- ज. अम.डॉ. में शुल्क की निर्धारित राशि के रूप में शुल्क अधिरोपित किया जाए ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

65. घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए अभ्यावेदनों की जांच के बाद प्राधिकारी उसका निम्नानुसार समाधान किए जाने का अनुरोध करते हैं :-

- क.से च. याचिकाकर्ता के संयंत्र का सत्यापन दौरा करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अत्यधिक एवं अभूतपूर्व पाटन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।
- छ. प्राधिकारी ने उनके अभ्यावेदनों को नोट किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि प्राधिकारी द्वारा सभी पाटनरोधी मामलों में अनुपालन की जा रही संगत प्रथा के अनुसार क्षति रहित कीमत का सही परिकलन किया गया है ।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के मत

66. किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने जांच का उत्तर नहीं दिया है ।
67. तथापि, प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत टिप्पणियों के आधार पर कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष निकाला है ।
68. प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अभ्यावेदनों तथा इस प्रकटन विवरण पर सहित अभ्यावेदनों में उठाए गए मुद्दों की जांच करने, तथा रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद निष्कर्ष पर पहुंचेंगे ।

क्षति की मात्रा एवं क्षति मार्जिन

69. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत निर्धारित की है । घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है । क्षति मार्जिन निम्नानुसार निकाला गया है :-

	इकाई	चीन जने.गण.
क्षति रहित कीमत	रुपए/लाख नीडल	***
पहुंच कीमत	रुपए/लाख नीडल	7,993
क्षति मार्जिन	रुपए/लाख नीडल	***
क्षति मार्जिन (%)	%	2000-2500%

निष्कर्ष

70. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अभ्यावेदनों तथा उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने; तथा रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि :-

- (क) संबद्ध देश द्वारा भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात संबंधित सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप विचाराधीन उत्पाद का पाटन हुआ है ।
- (ख) संबद्ध वस्तु के आयात के संबंध में घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।
- (ग) संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है और उसका खतरा है ।

घरेलू उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे:

71. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्यतः पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य अनुचित व्यापार प्रथाओं के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके जो देश के सामान्य हित में है ।

पाटनरोधी उपायों के अधिरोपण से किसी भी प्रकार से संबद्ध देश से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

72. यह स्वीकार किया गया है कि पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण से संबद्ध वस्तु का प्रयोग कर विनिर्मित उत्पाद का कीमत स्तर प्रभावित होगा और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव पड़ेगा । तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नकीं आएगी विशेष रूप से यदि पाटनरोधी शुल्क उस राशि तक सीमित हो जो घरेलू उद्योग की क्षति के समाधान हेतु आवश्यक है । इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों के अधिरोपण से पाटन प्रथाओं से प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होगा, घरेलू उद्योग की गिरावट रुकेगी और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्पों की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलेगी ।

सिफारिशें

73. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी और निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था । अधिनियम और पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू और सम्पन्न करने के बाद तथा संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में निश्चयात्मक सकारात्मक पाटन मार्जिन एवं ऐसे पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि वर्तमान मामले में पाटन एवं “क्षति” को समाप्त करने के लिए निश्चयात्मक शुल्क लगाना अपेक्षित है । अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं कि चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित प्रपत्र में और तरीके से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ।

74. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके । तदनुसार चीन जन.गण. के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है :-

शुल्क तालिका

क्र. सं.	टैरिफ मद का उप शीर्ष	वस्तुओं का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क की राशि	इकाई	मुद्रा
1	2.	3.	4.	5	6.	7.	8.	9.	10.
1	8452.30	सिचिंग मशीन नीडल्स	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	155,362	प्रति लाख नीडल्स	भारतीय रुपए

75. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क द्वारा सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत निर्धारित आकलनीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3, 8 I, 8 I, 9 और 9 के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

76. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 6th May, 2011

Final Findings

Subject : Anti-Dumping Investigations involving imports of Sewing Machine Needles, originating in or exported from China PR.

F. No. 14/10/2010-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred as the AD Rules);

Initiation

2. The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), having regard to 'the AD Rules', received a written application from M/s. Altek Beissel Limited, Kelambakkam, alleging dumping of Sewing Machine Needles (hereinafter referred to as subject goods); originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as the subject country).

3. Having been satisfied on the basis of positive evidence submitted by the domestic industry, the Authority vide Notification No. 14/10/2010-DGAD, dated 19th May, 2010 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiated Anti-dumping Investigation concerning imports of Sewing Machine Needles, originating in or exported from China PR.

Procedure

4. The procedure described herein below has been followed:

- i. The Authority notified the Embassies/Representatives of the subject country in India about the receipt of application made by the petitioner seeking investigation into dumping of the sewing machine needles, before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
- ii. The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 19.5.2010 to the Embassy of the subject country in India, known exporters from the subject country, importers, consumers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.

- iii. The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassy of subject country in accordance with Rule 6(3) supra.
- iv. The Embassy of the subject country in India was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters were also sent to them, along with the names and addresses of the exporters.
- v. The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information to the following known exporters in subject country in accordance with Rule 6(4).

S. N.	Name of Producer/ Exporter
1	Haimen City Meitu Needlemaking Co Ltd
2	Jiangsu Mais Sewing Machine Needles Co Ltd
3	Haimen Dali Sewing Machine Needles Co Ltd
4	Sword Machine Needle Co Ltd
5	Flying Tiger Needles Co Ltd
6	Nan Fang Needle Co Ltd

- vi. In response to the above notification, none of the exporters/ producers has responded to the initiation.
- vii. Questionnaire was sent to the following known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4). However, no questionnaire response has been received from any importer of the subject goods.

S. N.	Name of Importer
1	Madura Coats Private Ltd
2	Aswin Intercontinental
3	Groz Beckert Asia Private Ltd
4	Kohinoor Impex
5	Sunny International
6	Paul Bros Company Pvt Ltd
7	Sleek Corporation
8	Needle Industries (India) Private Limited

- viii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- ix. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to make available details of imports of subject goods for the past three years and period of investigation.

- x. Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if Anti-Dumping duty, lower than the dumping margin, would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xi. Investigation was carried out for the period starting from 1st January 2009 to 31st December 2009 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the periods April 2006-March 2007, April 2007- March 2008, April 2008-March 2009 and the POI.
- xii. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 1st December 2010. None of the parties except the applicant presented their views in the public hearing, and were requested to file written submissions of the views expressed orally.
- xiii. The arguments made in the written submissions/ rejoinders received from interested parties have been considered, wherever found relevant.
- xiv. In accordance with Rule 16 of the AD Rules, the essential facts considered by the Authority being disclosed to the known interested parties in the present disclosure and comments received on the same have been duly considered in the final findings.
- xv. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xvi. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded this finding on the basis of the facts available.
- xviii. *** In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

Product under Consideration and Domestic Like Article

5. The product under consideration is Sewing Machine Needles. The scope of the product under consideration includes sewing machine needles meant for both household and industrial purposes. Under each of the two groups of Sewing machine needles, there are various sizes, and point style (normal, ball point, leather point etc.) There are many types of needles, which are used for sewing woven, knit garment, leather, embroidery etc. The different needles are known by "Systems". Within each System, there are many sizes of needles. For each size there could be many point styles. Sewing Machine Needles are classified under Chapter 84 of Custom Tariff Act under the sub-heading 8452.30. The customs classification is however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

6. Sewing Machine Needle is fitted into a sewing machine and used for sewing a number of products. Needles are used for a large variety of applications, important among them being sewing of woven garments, knit garments, embroidery, and leather. Besides, there are a number of other applications such as furnishings, doll making, book sewing, vehicle seat covers etc.

Views of the Importers, Consumers, Exporters and Other Interested Parties

7. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties has filed any comment or submissions with regard to product under consideration, and like articles.

Examination by the Authority

8. With regard to like articles, Rule 2(d) of the AD Rules provides as under: -

"like article " means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;"

9. With regard to the possible difference between the product sold by the exporters in the Indian market and the product sold by the domestic industry, the Authority notes that none of the interested parties has disputed that there is any difference in the two products. After considering the information on record, the Authority holds that there is no known difference in product under consideration exported from the subject country and the product produced by the Indian industry. The domestic like article produced by the domestic industry is comparable to the imported subject product in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.

10. Thus, the Authority holds that Sewing Machine Needles produced by the applicant domestic industry is like article to the subject goods imported from the subject country in accordance with the AD Rules.

Scope of Domestic Industry & Standing

11. The application has been filed by M/s Altek Beissel Ltd., Kelambakkam.

Views of the Domestic Industry

12. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to standing of the domestic industry:

- i. Apart from the petitioner M/s Altek Beissel Ltd., Kelambakkam, there are three more producers of the product under consideration in India. M/s. TVS Sewing Needles Limited has suspended operations, allegedly as a result of continued dumping. The other two producers, M/s. Schmetz India Private Ltd and M/s. Groz Beckert Asia Private Ltd. are: -
 - a) 100% subsidiaries of their parent company in Germany,
 - b) export their entire production to their parent company, and,
 - c) import all needles from their respective German parent companies for re-sale in India.
- ii. Therefore, M/s Altek Beissel Ltd. is the only eligible domestic producer of the subject goods in India and constitutes domestic industry under Rule 2(b) of the Rules, 1995.
- ii. Production of petitioner constitutes a major proportion in Indian Production and therefore petitioner should be treated as “domestic industry” within the meaning of the Rules.

Views of the Importers, Consumers, Exporters and Other Interested Parties

13. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties has filed any comment or submissions with regard to domestic industry standing.

Examination by the Authority

14. With regard to standing of the domestic industry, Rule 2(b) states as under:

“Domestic Industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers only”.

15. The application has been filed by M/s Altek Beissel Ltd., Kelambakkam. Other known producer, M/s. TVS Sewing Needles Limited has suspended operations. M/s. Schmetz India Private Ltd. and M/s. Groz Beckert Asia Private Ltd. are 100% subsidiaries of their parent company in Germany, export their entire production to their parent company, and import all needles from their respective German parent companies for re-sale in India. Therefore their operations in the domestic market are essentially based upon imports and not from domestic production. The Authority also wrote to these manufacturers to provide inputs relating to the investigation. The Authority also wrote to the Administrative Ministry i.e DIPP to provide inputs on these or any other manufacturers manufacturing the PUC. However no response has been received either from these manufacturers or the Administrative Ministry. Thus, the Authority concludes that the applicant constitutes “domestic industry” for the purpose of the present investigations. Further, the applicant has the standing to file the case for anti dumping investigation on behalf of domestic industry as per Rule 2(b) and Rule 5(3)(a) of Anti Dumping Rules.

Normal value, Export Price and Dumping Margin

Normal Value for China PR

Views of the Domestic Industry

16. Applicants have claimed that China PR is a non-market economy. No country has granted market economy country status to China PR after following detailed evaluation procedure, examination and evaluation. They have further claimed that even China PR agreed in the accession treaty that WTO Members could use an NME antidumping methodology through December 11, 2016. China PR has been treated as non-market economy by European Commission and United States in the past three years. European Union and United States are members of World Trade Organization. In India also, the Designated Authority has treated China PR as non-market economy. The Designated Authority has treated China PR as non-market economy in practically all the investigations initiated against China PR after the amendment dated 31st May, 2002. Even after the amendment dated 4th Jan., 2003, the Designated Authority has treated China PR as a non-market economy.

Views of Producers/ Exporters from China

17. None of the producers/ exporters from China has filed any response to the investigation.

Examination by the Authority

18. The Authority notes that in the past three years, China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO Members. Therefore, in terms of para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules, China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the above presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the above Rules.

19. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provides information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from China PR are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a. The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b. The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) The exchange rate conversions are carried out at the market rate

20. The Authority notes that none of the exporters from China PR have filed any response. As information about domestic sales price, exports to third country, cost of production in China PR and other information as per prescribed questionnaire have not been furnished by any producer/exporter in China PR. The Authority therefore holds China as Non-Market Economy for the purposes of the present investigation.

Normal Value

21. The Authority indicated, in the initiation notification that the applicant has claimed that China PR is a non-market economy. The Authority invited comments from the interested parties in accordance with para 7 of Annexure I of the AD Rules. The Authority notes that none of the producer/exporter from China PR has responded to the initiation notification. Thus, none of the Chinese producers have claimed market economy treatment. Further, none of the interested parties have offered any comment on the choice of appropriate third country for determination of Normal Value.

In view of the above, the Authority has proceeded to determine the Normal value in case of China PR in terms of para-7 of Annexure-I to the AD Rules and has determined it on the basis of "any other reasonable basis". The normal value so determined works out to Rs. 162586 (equivalent to US \$ 3325) per lac pcs of needles (Conversion rate of INR being Rs. 48.9 = 1 US \$). The Normal Value so determined in the present case is mentioned in the dumping margin table.

Export Price for China

22. With regards to imports from China PR, because of non cooperation from producers/exporters the Authority, has examined transaction wise data from Info drive and China Customs as submitted by the petitioner as also DGCI&S data obtained from DGCI&S by the Authority. The Authority notes that exports from China PR as reported by Info drive are 5,377 Lac pcs, whereas China Customs reports 5,510 Lac pcs. Further, the quantum of imports, as reported in DGCIS report was 3920 Lac pcs of product under consideration in the POI. The Authority, however, has considered information available on DGCI&S data source for determination of the net export price and consequent dumping margin. After making adjustments on account of ocean freight and overseas insurance the ex-factory export price is calculated at US\$ 148 per Lac pcs.

Dumping Margin

23. On the basis of normal value and export price as determined above, the dumping margins for exporters from subject country are determined as per table below;

Dumping Margin Calculation (Per Lac Pcs):

Source of Data	DGCI&S
Normal value(US\$)	3325
Export price(US\$)	148
Dumping margin(US\$)	3177
Dumping Margin %	2151
Import volumes (Lac pcs)	3920

24. The dumping margins so determined are significant and above de-minimis level.

Injury Determination And Examination Of Causal Link

Views of the domestic industry

25. The followings are the views of domestic industry: -

- The product under consideration has a long history of dumping. An investigation was earlier conducted however, no definitive duties were imposed.
- Gradually, imports of sewing needles from China have so significantly increased that imports from China now command practically majority of total imports into India.
- Export price from the subject counties has remained at dumped level during POI.
- Production and capacity utilization of the domestic industry declined over the injury period whereas sales volumes increased in POI after showing a decline in 2007-08 and 2008-09.

- e. Profit/Loss (PBT, PBIT and PBDIT) of the domestic industry have all shown significant decline even become negative in 2008-09 and POI.
- f. Market share of the domestic industry has remained insignificant throughout the injury period. This is due to the fact that dumped imports have remained dominant.
- g. Imports from the subject country have been undercutting the prices of the domestic industry to a significant degree.
- h. Imports from the subject country have forced the domestic industry to reduce the price steeply during investigation period. Thus, the imports were depressing the prices in this period.
- i. Employment levels with the domestic industry have declined as compared to base year.
- j. Salary & wages: - Salary and wages level with the domestic industry has increased over the injury period.
- k. Demand and market share: -Whereas the imports from China have retained a significant market share in demand, the market share of domestic industry has remained insignificant throughout the injury period.
- l. Growth: - Growth of the domestic industry in a number of parameters shows negative trend.
- m. Domestic industry has suffered material injury and is trapped in a vicious cycle of volume effect and price effect. With increase in volume of imports of the subject goods from the subject country into the Indian market as a result of excess capacity with the Foreign Producers, the domestic industry suffered from loss of sale and loss of market share. This resulted in adverse volume effect. Loss of sale forced the domestic industry to reduce their domestic selling price in order to sell the subject good in the domestic market thus resulting in adverse price effect. Resultantly, domestic Industry faced adverse volume effect and adverse price effect as a result of unfair trade practices of the exporting country.
- n. There is significant increase in the import volumes in absolute terms. This increase in imports is in spite of best efforts of the domestic industry to sell their material even at sub-optimal prices. The increase in imports would have been more, had the domestic industry not made efforts to curtail the same by offering lower prices.
- o. Price undercutting is significant. In spite of offering matching prices, there is a positive price difference between the domestic product and imported product. Given nature of the product involved, any price difference between the domestic product and imported product is not acceptable to the consumers and the domestic industry is under constant pressure for price reductions. As a result, one of the Indian producers has already suspended production after nearly three decades of operations.
- p. Should the current dumping continue, the petitioner would also be forced to suspend the production.

Views of Responding Producers / Exporters

26. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties have raised any issues regarding injury to the domestic industry and causal link.

Examination by the Authority

27. The Authority has taken note of submissions on injury to the domestic industry and has analyzed injury considering the verified data, facts available on record and the applicable law. Injury analysis has been carried out during injury period and POI as per practice and as mandated by the Rules.

28. Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of:

- a. The volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and
- b. The consequent impact of these imports on domestic producers of such articles.

29. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

30. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry Para (iv) of Annexure II of the Anti Dumping Rules states as follows:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

31. The Authority collected transaction wise details of imports of subject goods from DGCI&S, as also from World Trade Atlas. The Authority also examined the data as per Info-drive data source as provided by the applicant. It is noted that the imports reported in Info drive and WTA are higher than those reported in DGCI&S data source. However, for the purpose of Volume analysis and price effect of dumping in the present investigation, the analysis has been done based upon the DGCIS data, as under.

Import Volumes and share of subject country

Import Volumes and share of subject country	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
China(Subject country)	In Lacs	2,942	2,935	2,655	3,920
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	100	90	133
Others	In Lacs	1,126	950	924	913
Total Imports	In Lacs	4,068	3,885	3,571	4,833
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	95	88	119
Market Share in Imports					
China(Subject country)	%	72.30	75.55	74.18	81.11
Others	%	27.68	24.45	25.82	18.89
Production of DI	In Lacs	347	307	226	158
Imports from Subject country	In Lacs	2,942	2,935	2,655	3,920
Imports from Subject country as a %age of production	%	847.83	956.02	1174.78	2481.01

Market Share in Imports

32. As per the data shown in the above table:

- Imports from the subject country have increased significantly in absolute terms and in relation to imports in India when the comparison is done with the imports in the immediate preceding year i.e., 2008-09. However, when compared to the base injury period the imports volumes have gone up by around 33%.
- Imports from subject country have been significant in relation to production and consumption in India throughout the injury period.

Demand, Output and Market shares

Demand, Output & Market Share	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Sales of Domestic industry	In Lacs	90	61	49	70
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	67	55	77
Sales of other Indian producer	In Lacs	249	255	253	-
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	103	102	-
Imports - Subject country	In Lacs	2,942	2,935	2,655	3,920
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	100	90	133
Imports - Other Countries	In Lacs	1,126	950	924	913
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	95	88	118
Total Demand	In Lacs	4,407	4,201	3,881	4,903
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	95.32	88.06	111
Market Share in Demand					
Domestic industry	%	2.05	1.45	1.27	1.42
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	70	62	69
Other Indian Producer	%	5.64	6.07	6.52	-
Subject country	%	66.76	69.87	68.40	79.96
Other countries	%	25.55	22.61	23.81	18.62

33. The Authority notes that after determining the demand for the subject goods by addition of domestic sales and all imports from all the countries, the demand for subject goods declined during the years 2007-08 and 2008-09 over the base year. However, the demand for the subject goods increased during the POI. The increase in the demand during the POI was by around 11.25 % over the base year. Further, the market share of imports from the subject country have also increased significantly. On the other hand, the market share of the domestic industry in the total demand has declined. The share of domestic industry which was indexed at 100 in 2006-07 declined to 69 during the POI, representing a decline of as much as 31%. On the other hand, during the same period the share of imports from the subject country increased from 66.76% to 79.96%. The Authority therefore, notes that the imports from the subject country have continued to capture a significant portion of the Indian demand resulting in injury to the domestic industry during the POI.

Capacity, production and capacity utilization of the Domestic Industry

Capacity, production and capacity utilization	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Installed Capacity	In Lacs	900	900	900	900
Production	In Lacs	347	307	226	158
Capacity Utilization	%	38.53	34.15	25.13	17.60

34. Data of domestic industry on capacity, production and capacity utilization reveals that the capacity of the domestic industry remained unchanged at 900 lac pieces during the injury period. The production of subject goods shows a consistent decline throughout the injury period. The capacity of domestic industry remained under-utilized. The capacity utilization which was 38.53% during 2006-07, declined significantly to 17.60 % during the POI.

Sales volume of Domestic Industry

	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Sales Volume	In Lacs	90.39	60.99	49.41	69.53
Trend	Indexed	100	67	55	77

35. The above data on the sales of domestic industry shows that there was a fall in the sales up to 2008-09 and then an increase in the POI. However, the level of sales in the Poi is still lower than the base year.

Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

36. With regard to the effect of dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18, the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of like product in India or whether effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred to a significant degree.

37. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR), Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry and the landed cost of imports from the subject country have been examined.

Price suppression and depression effects of the dumped imports:

38. The price suppression and depression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production and net sales realization of the domestic industry.

	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Cost of Sales	Rs/Lac Units	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	109	161	157
Selling Price (NSR)	Rs/Lac Units	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	109	107	113

39. It is seen from the above table that the cost of sales increased more than selling prices of domestic industry during POI as compared to the base year. The trend shows that cost of sales increased significantly by 57% during POI, as compared to base year whereas the selling price had increased by 13% during POI indicating that the domestic industry could not realize the selling price commensurate with the cost of sales, thereby causing significant price depression. The position is similar in 2008-09.

Price undercutting and underselling effects

Price Undercutting

Source of Data		DGCI&S
NSR of DI	Rs/Lac Units	***
Landed Value	Rs/Lac Units	7,993
Price Undercutting	Rs/Lac Units	***
Price Undercutting	Times	38

40. While working out the weighted average net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise

duty paid have been deducted. The weighted average landed value of imports has been calculated by adding 1% landing charge for determination of Basic Customs Duty and then adding this Basic Customs Duty to the average export / CIF prices from the subject country, as reported by DGCI&S data source.

41. It is seen that the landed price of imports of the subject goods are significantly below the selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.

Injury Margins

Source of Data		DGCI&S
NIP of DI	Rs/Lac Units	***
Landed Value	Rs/Lac Units	7,993
Injury Margin	Rs/Lac Units	***
Injury Margin	%	2,000-2,500

42. For the purpose of Injury margin calculations, as above, the landed price of imports from subject country as reported in DGCI&S data has been compared with the NIP.

Examination of other Economic Parameters of Domestic Industry

43. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

Profits and actual and potential effects on the cash flow

44.

	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Cost of Sales	Rs/Lac Units	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>109</i>	<i>161</i>	<i>157</i>
Selling Price (NSR)	Rs/Lac Units	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>109</i>	<i>107</i>	<i>113</i>
Profit/Loss	Rs/Lac Units	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>110</i>	<i>(181)</i>	<i>(125)</i>
Profit/Loss before Tax	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>74</i>	<i>(99)</i>	<i>(96)</i>
Profit before interest & tax	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>76</i>	<i>(99)</i>	<i>(96)</i>
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>75</i>	<i>(32)</i>	<i>(10)</i>

The Authority notes that there has been significant deterioration in the profitability of domestic industry over the injury period. It is observed that in view of long history of dumping of the product in the Country, the profitability position of the domestic industry has remained

quite adverse. In fact, the domestic industry has been suffering financial losses in 2008-09 and the POI. As a result of financial losses, cash losses have been suffered in this period.

Return on investment and ability to raise capital

	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Profit before interest & tax	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	76	(99)	(96)
Net Fixed Assets	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	67	63	107
Working Capital	Rs.Lacs	-	-	-	-
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	-	-	-	-
Capital Employed	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	67	63	107
Return on Capital Employed(NFA basis)		***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	114	(158)	(90)

45. The Authority notes that the return on capital employed earned by the domestic industry followed the same trend as that of profitability and was negative in 2008-09 and POI.

Productivity

	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Productivity per employee	Lac Units	2.19	2.21	1.80	1.20
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	101	82	55
Productivity per Day	Lac Units	0.95	0.84	0.62	0.43
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	89	65	46

46. The data on productivity per employee shows that it decreased by nearly 50% in POI from the base year.

Employment and wages

	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Employment (Manpower strength)	Nos.	158	139	126	132
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	88	80	84
Wages	Rs.Lacs	129.62	142.75	131.08	155.63
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	110	101	120

47. The employment level has declined as the petitioner is finding it very difficult to carry on the employment and pay wages to the workers in view of continued adverse performance of the

product. In indexed form the employment declined by 16% during POI from base year. However, the wages increased by 20% in the POI as compared to base year.

Inventories

	Units	2006-07	2007-08	2008-09	Jan09-Dec09
Opening Stock	Lac Units	179.66	153.93	153.60	215.54
Closing Stock	Lac Units	153.93	153.68	230.49	209.02
Average Stock	Lac Units	166.80	153.81	192.05	212.28
Average Stock in terms of No. of Days' sales	Days	175.55	182.65	309.90	489.10
Trend	Indexed	100	104	177	279

48. The information about the inventory levels of subject goods is contained in the above table. It is seen that the inventory levels for the subject goods have increased as compared to the base year and previous year, 2008-09. It is noted that the petitioner was holding stock of nearly 500 days in hand in the POI. This is in spite of the fact that the petitioner has been producing at the levels significantly below the capacities installed.

Growth

49. The growth in production and capacity utilization has shown a constant decline. Though the domestic industry has shown a positive growth in sales in the POI as compared to previous year 2008-09, the capacity has remained under utilized. The profitability of domestic industry has significantly declined during the POI. The performance of the domestic industry has also deteriorated during the period of investigation in terms of return on investment and cash profit. It is also seen that the selling price is significantly lower than the cost of sales during POI, thereby causing significant price depression. Besides, the imports of subject goods are significantly undercutting the prices of the domestic industry. The price underselling was also significant.

Ability to make Investment

50. The authority notes that the domestic industry had not changed the capacity of subject goods from base year to POI. No evidence of any plans for further investment has come to the notice of the Authority.

Magnitude of Dumping

51. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margins determined against the subject country, for the POI, are above de-minimis and significant.

Factors affecting prices

52. As already seen in the foregoing paragraphs, the imports from the subject country are undercutting the domestic prices. Comparison of cost of production and selling price of the

domestic industry shows that the imports are also depressing prices of the domestic industry. It was found that the landed value per lac pieces in POI was lower than both the net selling price and non-injurious price of the product under consideration causing price undercutting and price underselling in the Indian market. As a result of price difference between the imported product's price and domestic industry's price, the imports have taken a major share in the growth in Indian demand for the subject goods.

Analysis and conclusion of Injury

53. The examination of above injury parameters indicates that the financial performance of domestic industry, which was already quite adverse even in the base year declined significantly in POI.

54. The examination of the imports of the product and performance of domestic industry clearly shows that the imports of the product under consideration have increased in absolute terms and also in relation to production and consumption in India. The imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market and the effect of the dumped imports has resulted in depression of the prices of the domestic industry in the market. Although the cost of sales has declined, the domestic selling prices have declined more than the decline in cost of sales. Further, there has been a significant price under cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India and the effect of such imports is to prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, performance of the domestic industry deteriorated from the base year in terms of sales, production, capacity utilization, market share, profits, cash profits & return on investments. Imports are affecting the domestic prices indicating the material injury suffered by the domestic industry as is evident by analyzing the trends from the base year. On the basis of above it is concluded that the DI has suffered material injury within the scope of AD Rules.

Causal Link and other factors

55. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti Dumping, the Authority is required to examine whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to the injury to the domestic industry. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry. It was examined whether these other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It was noted that:

Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

56. It is noted from import data that 79.96% imports as a percentage of domestic demand, are from the subject country during POI and the imports from other countries are 18.62%. Further, the imports from other countries are at a significantly higher price. Therefore, the imports from other countries do not affect the prices in the domestic market.

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

57. Based on quantum of imports from all sources, including the subject country and after taking into account the total production of the domestic industry and the production of other Indian producers, the authority notes that although during the years 2007-08 and 2008-09, there was marginal decline in the demand for the subject goods, during the POI the total demand for the subject goods has shown a significant increase. The increase in the demand for the subject goods during the POI was as much as 11.25% over the base year. In view of the growth in the demand for the subject goods during the POI over the base year, the Authority notes that the changes in the consumption and demand for the subject goods have not been a factor causing injury to the domestic industry.

Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

58. The goods are freely importable. No evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has come to the knowledge of the Authority. The Authority also notes that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and the imported product is sold to meet the similar applications/ end uses as domestically produced subject goods.

Development of technology

59. On the basis of examination of the records of the petitioner, the Authority concludes that development in technology has not been a relevant factor for the injury to domestic industry.

Export performance

60. The Authority notes that the petitioner has provided information with regard to domestic operations separately. Claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations. Hence, the Authority concludes that material injury suffered by the domestic industry may not be as a result of the export performance of the domestic industry.

Productivity of the Domestic Industry

61. Productivity of the domestic industry in terms of production per employee has shown decline in 2008-09 and during POI as compared to preceding year because of the decline in total production during the same period.

62. No other factor, which could have possibly caused injury to the domestic industry, has been brought to the knowledge of Authority.

Conclusion on Causation

63. The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:

- a. The landed price of imports was significantly lower than the selling price of the domestic industry. As a result of price undercutting, the consumers have resorted to higher volume of imports, thus leading to decline in market share of the domestic industry.
- b. Decline in market share has prevented the domestic industry from increasing their production and capacity utilization.
- c. Landed price of imports was undercutting the prices of the domestic industry. The imports from subject country have caused price underselling in the Indian market. Resultantly, lower import prices appear to have prevented the domestic industry from increasing their prices.
- d. Price depression effect of the imports has directly resulted in deterioration in profitability of the domestic industry and consequently the return on investment and cash profits. Thus, the decline in profits, return on investments and cash profits is apparently due to presence of dumped imports in the market.
- e. Significant deterioration in performance of the domestic industry in the period of investigation is apparently due to presence of dumped imports in the market.

Submissions made by the domestic Industry

64. The Domestic Industry has made the following post hearing written submissions:

- a. There is significant difference between the prices offered by the domestic industry and Foreign Producers. Even when the domestic industry has been offering sub-optimal prices, it is unable to enhance sales volumes to the extent of demand. Thus, low sales volumes is a direct consequence of dumped Chinese imports;
- b. An effort to enhance sales volumes resulted in reduction in the selling prices. As a direct consequence, the profits of the domestic industry declined so rapidly that

- the domestic industry went into a situation of financial losses from a situation of profits;
- c. Reduction in profits directly resulted in deterioration in return on capital employed and cash flow. Thus, deterioration in profits, return on capital employed and cash flow is directly due to dumped imports;
 - d. Consistent low volume of sales has adversely affected the production and capacity utilization. Thus, decline in production and capacity utilization is due to dumped imports.
 - e. Consistent dumping of the product and reduction in production has adversely affected employment and wages.
 - f. Persistent dumping has lead to plant closure by M/s. TVS Needles. Should the situation be allowed, domestic industry would be swiped off.
 - g. Normation: Normation may be done as per accepted costing principles.
 - h. The condition of the domestic industry is so pathetic that in case immediate relief in the form of anti dumping measure is not recommended, it would be difficult for the domestic industry to survive.
 - i. Duty be imposed as fixed quantum of duty denominated in US \$.

Examination by the Authority

65. The Authority after having examined the submissions made by the domestic Industry seeks to address the same as follows.

- a. to f. The Authority after having undertaken verification visit of the petitioner's plant concludes that material injury has been inflicted on the domestic industry as a result of severe and unprecedented dumping.
- g. The Authority takes note of these submissions and concludes that NIP has been correctly worked out in line with the consistent practice being followed by the authority in all AD Cases.

Views of other interested parties

66. None of the other interested parties have responded to the investigations.

67. However, the Authority has concluded on Causal link based on comments furnished by the interested parties.

68. The Authority would conclude its determination, after examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein, including on this disclosure statement; and considering the facts available on record.

Magnitude of injury and injury margin

69. The Authority has determined non-injurious prices of subject goods for the domestic industry taking into account the cost of production of the domestic industry. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports to determine the injury margin. The injury margins have been worked out as follows:-

	Unit	China PR
NIP	Rs./Lac Needles	***
Landed Price	Rs./Lac Needles	7,993
Injury Margin	Rs./Lac Needles	***
Injury Margin (%)	%	2000-2500%

Conclusions:

70. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that:

- (a) The product under consideration has been exported to India from the subject country below associated Normal values, thus resulting in dumping of the product under consideration.
- (b) The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods.
- (c) The material injury and threat thereof has been caused by the dumped imports from subject country.

Indian industry's interest & other issues

71. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

72. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping

practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

Recommendations

73. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Act and the AD Rules and having established definitively positive dumping margins concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject country and as well as material injury thereof to the domestic industry caused by such dumped imports; the Authority is of the view that imposition of definitive duty is required to offset the dumping and 'injury' in the instant matter. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duties concerning imports of the subject goods from China PR in the form and manner described hereunder.

74. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the amount indicated in Col 8 of the table below is recommended to be imposed concerning all imports of the subject goods originating in or exported from China PR:-

Duty Table

Sl. No	Heading / Sub heading	Description of goods	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	8452.30	Sewing Machine Needles	China PR	China PR	Any	Any	1,55,362	Per lakh needles	Indian Rupee

Further Procedure

75. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under Sections 3, 3A, 8B, 8C, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

76. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAY LAXMI JOSHI, Designated Authority